आप उल्लू हैं ?

– अनिल चावला

यदि कोई आपसे कहे कि आप उल्लू है तो निश्चय ही आप उसे मारने को हाथ उठा देगें । हाथ उठाने से पूर्व यह देखें ले कि बोलने वाला कोई अंग्रेजीदाँ तो नहीं है क्योंकि अंग्रेजी में कहा जाता है कि As wise as an owl. अंग्रेजो के लिए उल्लू बुद्धिमत्ता का प्रतीक होता है, जबकि भारत में उल्लू को महामूर्ख माना गया । भारत में उल्लू का पट्ठा एक गाली है, पर यदि आप इंगलैण्ड जाएँ तो आप जिसे चाहे उलूकपुत्र के रूप में संबोधित कर सकते हैं ।

प्रत्येक भाषा में शब्दों का जो शाब्दिक अर्थ होता है, उसके साथ ही एक पीछे छिपा अर्थ होता है । उस पीछे छिपे अर्थ में भाषा का इतिहास, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, धर्म, दर्शन, सामाजिक संरचना इत्यादि का ताना–बाना होता है। भाषा के बदलते ही व्यक्ति की सोच और भावनाएँ दोनों बदलने लगती हैं । एक उदाहरण से बात कुछ स्पष्ट हो सकेगी। इंगलैण्ड में सूरज बहुत कम निकलता है अतः सूर्य देव के दर्शन होने पर वहॉ के लोग प्रसन्न हो जाते हैं। इसी कारण अंग्रेजी साहित्य में Sunny day, Sunny

© All Rights Free August 2008
Author – Anil Chawla Email: samarthbharatparty@gmail.com

weather, Sunny personality का गुणगान होता है । काले बादलों को देखकर अंग्रेज दुःखी होता है । वहॉ कहावत है कि Every dark cloud has a silver lining (हर काले बादल के पीछे एक चॉदी की चमकदार रेखा होती है) उनके लिए काला बादल जीवन के हर दुःख, कष्ट, परेशानी एवं चिन्ता का प्रतीक है । इसके ठीक विपरीत भारत में जब बादल आकाश में छाते हैं तो मन खुशी से नाच उठता है । यदि हिन्दी साहित्य और फिल्मों से बादल, सावन, फुहारें, बरखा रानी इत्यादि को निकाल दिया जाए तो शायद सबकुछ रसहीन हो जाएगा । काली घटा के छाने पर नायिका के मन में जो मयूर नाचने लगता है और बरसात के बादल की दीवानगी को अंग्रेजी में व्यक्त करना संभव ही नहीं है।

हिन्दी शब्दों के साथ जो अहसास, भावनाएँ, और सुगन्ध जुड़ी होती हैं, उन्हें अंग्रेजी में व्यक्त करने में आने वाली कठिनाई का एक और उदाहरण चाँदनी रात है । भारत में चाँदनी रात के साथ एक रूमानियत जुड़ी है । हिन्दी ही नहीं, भारत की हर भाषा में श्रंगार रस के कवियों ने चॉदनी रात, पूनम की दूधिया चाँदनी और चौदहवीं के चाँद के बारे मे अनगिनत कविताएँ और गीत लिखें हैं । अंग्रेजी साहित्य के बारे में मेरा ज्ञान बहुत कम है पर जो थोड़ा बहुत पढ़ा है उसमें चाँदनी का कोई जिक्र याद तो नहीं आ रहा । अंग्रेजी में चॉदनी के लिए Moonlight शब्द का प्रयोग होता है । क्या आपके मन में Moonlight से वह मधुर भाव जाग्रत हेाता है जो चाँदनी में ठंडी बयार से होता है ?

चाँदनी की बात मोहब्बत के अफसाने के बिना अधूरी होती है । वो नजरों का मिलना, उनका पलकें झुकाना, दुपट्टे के कोने को मुँह में दबाना, उनका शर्माना और फिर मुस्कुराहट की बिजली गिराकर हमें

दीवाना बना जाना – जरा इसका अंग्रेजी अनुवाद करने का प्रयास तो कीजिए। निश्चय ही घटना तो अंग्रेजी में व्यक्त हो जाएगी पर उसकी सौम्यता, मधुरता, मादकता समाप्त हो जाएगी । भारत की किसी भी भाषा का लेखक या कवि जब प्रेम प्रसंग का चित्रण करता है तो पाठक के मन में हूक–सी उठती है, कुछ गहरे छिपे मीठे दर्द जाग उठते है और एक गहरी साँस के साथ होंठ बोल उठते हैं – हाय मैं मर जाऊँ। प्रेम के चित्रण की यह परंपरा नितांत भारतीय है। इंगलैण्ड में न हूक उठती है, न मीठा दर्द होता है और न ही प्रेमी लंबी सॉस लेकर हाय कहते हैं । इसलिए वहॉ की भाषा में इन सबके लिए शब्द ही नहीं हैं ।

अंग्रेजी में शब्द तो समर्पण और त्याग के लिए भी नहीं है । Surrender शब्द में युद्ध हारने के बाद सिर झुकाने का भाव छिपा है, प्रेम में स्वेच्छा से सहर्ष अपना सर्वस्व अर्पित करने के संदर्भ में Surrender का प्रयोग कुछ उसी प्रकार है जैसे कोई कालिख से भरे हाथों मे प्रभु का प्रसाद ग्रहण कर रहा हो । त्याग के लिए Renunciation का प्रयोग होता है, पर जो पवित्र भाव त्याग में है वह Renunciation में कहाँ ?

समर्पण और त्याग जैसे उच्च आदर्शो की बात उस संस्कृति में बेमानी होती है जहाँ बार–बार दोहराया जाता है कि There is nothing like a free lunch हमारे यहॉ तो गुरूद्वारों में प्रतिदिन लंगर चलता है । भूखे को भोजन कराना और प्यासे को पानी पिलाना सबसे बड़ा धर्म ही नहीं, सबसे बड़ा आनंद भी माना गया है । दुसरे को तृप्त करके जो आत्मिक सुख प्राप्त होता है , उसे पूरे विश्व में लूटपाट मचाने वाले अंग्रेज कभी समझ ही नहीं सकते । इसीलिए उनकी भाषा में आनन्द के लिए कोई शब्द नहीं है

हम जो भाषा बोलते है, उसी में सोचते हैं । भाषा में निहित संस्कृति, धर्म, दर्शन, जीवनशैली हमारे मानस को नियंत्रित करती है । अंग्रेजी में और वर्तमान संदर्भ में कहें तो वह हमारे दिल और दिमाग का

Operating Software बन जाती है । अंग्रेजी बोलने वाला बार–बार Touch wood तथा Keeping my fingers crossed करने लगता है । कई बार उसे यह ज्ञात ही नहीं होता कि वह इन मुहावरों का प्रयोग कर ईसाई धर्म के प्रतीक क्रास को याद कर रहा है । इसके ठीक विपरीत ठेठ देसी हिन्दीभाषी राम–राम, हरि ओम, जय बजरंग बली का उच्चारण करता है ।

इसका यह अभिप्राय कतई नहीं है कि हर अंग्रेजी बोलने वाला ईसाई हो जाता है और हर हिन्दीभाषी हिन्दू। कहने का अर्थ केवल इतना है कि किसी भी देश की भाषा की जड़ें उस देश के भूगोल, जलवायु, इतिहास, संस्कृति, धर्म, दर्शन इत्यादि में होती हैं । अंग्रेजी की जड़ें इंगलैण्ड और अमेरिका में हैं, भारत में नहीं । यदि हमें भारत की धरती, इतिहास और संस्कृति से पोषण प्राप्त करना है तो हमें हिन्दी को अपनी सोच–विचार की भाषा बनाना होगा ।

बात उल्लू से प्रारम्भ की थी तो उल्लू पर ही समाप्त करना उपयुक्त होगा । उल्लू रात के अंधेरे में छिप कर निरीह प्राणियों पर आक्रमण करता है । उल्लू सामाजिक प्राणी नहीं है । उल्लू महास्वार्थी होता है और किसी का मित्र नहीं होता है । कई पक्षी जीवन में एक ही बार जोड़ा बनाते है और जोड़ीदार के मर जाने पर फिर जोड़ा नहीं बनाते हैं । उल्लू ऐसी अति भावुकता से मुक्त होते हैं। सच यह है कि उल्लू में वह सब कुछ है जो उसे भारतीय सभ्यता में हर प्रकार से निंदनीय बनाता है और पश्चिमी सभ्यता में अनुकरणीय । हम उल्लू बनना चाहते है या नीर–क्षीर–विवेक सम्पन्न हंस – यह निर्णय आपको, मुझ को और हर व्यक्ति को करना है ।

अनिल चावला

28 अगस्त 2008